प्र.1 - सुरक्षा परिषद द्वारा दिए गए दिशा-निर्देश और चेतावनी के बाद उत्तर कोरिया द्वारा किए गए परमाणु परीक्षण के उपरांत इसके व्यवहार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, जो कि लगातार परमाणु परीक्षण कर जा रहा है। आपकी राय में संयुक्त राष्ट्र और अन्य शक्तियों को उत्तर कोरिया के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? टिप्पणी करें। (200 शब्द)

मॉडल उत्तर

दृष्टिकोण:

- भूमिका में उत्तर कोरिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को बतायें।
- उत्तर कोरिया द्वारा लगातार किये जा रहे परमाणु परीक्षण को विश्व के देशों द्वारा कैसे नियंत्रित करना चाहिए?
- अंत में संतुलित निष्कर्ष दें।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् कोरिया संकट उत्पन्न हुआ और कोरिया संकट की परिणति ने उसे दो खेमों में बांट दिया-उत्तरी कोरिया एवं दक्षिणी कोरिया। उत्तरी कोरिया में साम्यवाद का प्रसार हुआ, तो दक्षिणी कोरिया में अमेरिकी पूंजीवाद का विस्तार हुआ।

विभाजन के बाद उत्तर कोरिया में व्यक्तिपरक शासन व्यवस्था का आगमन हुआ तथा 2003 में NPT से निकलने के बाद उत्तर कोरिया ने शक्ति की स्थापना में पहला परमाणु परीक्षण किया और अभी लगातार परीक्षण कर रहा है, जो अंतर्राष्ट्रीय नियमों की अवहेलना करता है।

उत्तर कोरिया द्वारा किए गए परमाणु परीक्षण को रोकने के लिए निम्नलिखित उपायों पर विचार करना चाहिए-

- बहुपक्षीय सहयोग के तहत जापान अमेरिका और दक्षिण कोरिया जैसे देशों को एक साथ आना चाहिए और उत्तर कोरिया की महत्वाकांक्षाओं को नियंत्रित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।
- उत्तर कोरिया के लिए यूएनडीपी द्वारा विशेष पैकेज-देकर गरीबी खाद्य सुरक्षा आर्थिक समस्याओं का समाधान करने के लिए एक अनुकूलित विकास योजना तैयार करना चाहिए।
- व्यापार समझौते के तहत व्यापार के नकारात्मक संतुलन को कम करने के लिए पड़ोसी देशों के साथ व्यापार समझौते को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- चीन जैसे साम्यवादी देश को उत्तर कोरिया से कोई खतरा नहीं है, अत: कूटनीतिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए उसे NPT की सदस्यता फिर से दिलाने की कोशिश करनी चाहिए।
- पड़ोसी देशों को अपनी तकनीक को बढ़ाने पर काम करना चाहिए, क्योंकि उत्तर कोरिया मिसाइल लॉन्च करने के लिए मोबाइल लांचर वाहन का उपयोग करता है, ताकि इसे समाप्त किया जा सके।

प्र.2 - भारत और अमेरिका के बीच हुए लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेन्डिंग ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) क्या है? क्या यह समझौता चीन को प्रतिसंतुलित करने में एक प्लेटफार्म की तरह कार्य करेगा?

(200 शब्द)

मॉडल उत्तर

दृष्टिकोण:

- भूमिका में लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेन्डिंग ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) क्या है? बतायें।
- इसकी चर्चा करते हुये बतायें कि यह समझौता चीन को प्रतिसंतुलित करने में किस तरह सहायक होगा।
- अंत में संतुलित निष्कर्ष दें।

भारत और अमेरिका के बीच लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेन्डिंग ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) 2016 में हुआ एक समझौता है। इस समझौते के तहत:-

- दोनों देश आपस में सैनिक स्तर पर सहयोग करेंगे जिसमें साजो-सामान, प्रौद्योगिकी भोजन एवं अन्य सेवाएं प्रदान की जायेगी।
- इस संधि के तहत दोनों देश एक दूसरे को प्रशिक्षण एवं अन्य सहायता उपलब्ध करायेंगे, जैसे मालाबार सैन्य अभ्यास के दौरान दिखायी गयी।
- यह मानवीय सहायता अभियानों के लिए संधि किया गया है अर्थात् कोई भी देश एक-दूसरे के यहां सैन्य तैनाती संबंधी कार्य नहीं करेंगे।
- दोनों देशों के ऊपर यह बाध्यता नहीं है, कि युद्ध के समय अपने सैन्य अड्डों का प्रयोग करने दे।

यह समझौता चीन को प्रतिसंतुलित करने में निम्नलिखित भूमिका निभा सकता है-

- यह व्यवस्था चीन को काउण्टर करने में सहायक हो सकता है, क्योंकि दक्षिणी-चीन सागर में चीन अपना प्रभुत्व बढ़ा रहा है।
- LEMOA समझौता भारत-अमेरिका संबंधों के लिए प्लेटफॉर्म की तरह कार्य करेगा, क्योंकि इससे भारत एनएसजी में सदस्यता प्राप्त कर सकता है।
- UNSC में स्थायी सदस्यता प्राप्त करने के लिए अमेरिका का समर्थन प्राप्त कर सकता है।
- डोकलाम के मुद्दे पर भारत और चीन के बीच विवाद हमेशा बना रहा है। अत: संभावना के तौर पर युद्ध भी जताया जा रहा है। अत: इस समझौते से भारत को सैनिक स्तर पर सहयोग मिल सकता है।

प्र.3 - म्यांमार में नवगठित लोकतांत्रिक सरकार को किन चुनौतियों का सामना करने की संभावना है? म्यांमार में कट्टर सैन्य शासन अभी भी 25% सीटों पर नियंत्रण रखे हुए हैं, तो दूसरी तरफ रोहिंग्या मुसलमानों के अधिकार को लेकर कोई सार्थक प्रयास नहीं किया गया है। भारत इन चुनौतियों से निपटने में किस तरह से सहयोग कर सकता है? चर्चा करें। (200 शब्द)

मॉडल उत्तर

दृष्टिकोण:

- भूमिका में नवगठित लोकतांत्रिक सरकार को किन चुनौतियों का सामना करने की संभावना है, को लिखें।
- चुनौतियों का विवरण देते हुए स्पष्ट करें।
- भारत इन चुनौतियों से निपटने में किस तरह से सहयोग कर सकता है?
- अंत में संतुलित निष्कर्ष दें।

म्यांमार में नवगठित लोकतांत्रिक सरकार के गठन के साथ ही चुनौतियों की एक सूची तैयार हो गई है, क्योंकि पूर्व में यहां सैन्य नियंत्रण रहा है और सैन्य नियंत्रण के कारण यहां लोकतांत्रिक मूल्यों को कम महत्व तथा मानव अधिकारों के उल्लंघन होते रहे हैं।

नवगठित लोकतांत्रिक सरकार के सामने निम्नलिखित चुनौतियां हैं-

(i) म्यांमार में संसाधन प्रचुर मात्रा में है, परंतु इनका दोहन आर्थिक रूप से नहीं हो पा रहा है। जिससे इनकी अर्थव्यवस्था कुछ दशकों से खराब चल रही है।

(ii) रोहिंग्या मुसलमानों के मुद्दे पर वैश्विक स्तर पर निंदा हो रही है। अतः सामाजिक समानता लाने की जरूरत है।

(iii) विपक्षी दल के 25% सीटों पर काबिज होने से सतारूढ़ दल को आंतरिक व बाह्य नीतियों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है।

अतः भारत इन चुनौतियों से निपटने में निम्नलिखित तरह से सहयोग कर सकता है-

- भारत म्यांमार में इंफ्रास्ट्रक्चर को विकसित कर सकता है तथा यहां के लिए सड़क निर्माण, बंदरगाह निर्माण, IT क्षेत्र में सहयोग, हंबीबिया विश्वविद्यालय का निर्माण कार्य तथा अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग कर सकता है।
- भारत अपने सहयोग से अन्य देशों के साथ भी इनका संबंध सुधार सकता है। रोहिंग्या मुसलमानों के मुद्दे पर भारत सहयोग कर सकता है।
- म्यांमार में जल विद्युत क्षमता ज्यादा है, अतः भारत म्यांमार से संबंध बनाकर जल विद्युत योजनाओं में निवेश कर सकता है।

प्र.4 - मध्य एशिया भारत के लिए कूटनीति के साथ-साथ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण होता जा रहा है, लेकिन कई ऐसी समस्याएं हैं जो भारत को मध्य एशिया तक प्रवेश में बाधा उत्पन्न कर रही है। कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करें। **(200 शब्द)**

मॉडल उत्तर

दृष्टिकोण:

- भूमिका में मध्य एशिया के बारे में बतायें।
- मध्य एशिया भारत के लिए कूटनीति के साथ-साथ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण होता जा रहा है, कैसे?
- लेकिन कई ऐसी समस्याएं हैं जो भारत को मध्य एशिया तक प्रवेश में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। चर्चा करें।
- अंत में संतुलित निष्कर्ष दें।

मध्य एशिया, परम्परागत रूप से सोवियत संघ का अंग रहा है, लेकिन 1990 में विघटन के बाद तान वाले पांच देश स्वतंत्र हो गये। जिन्हें सामूहिक रूप से मध्य एशिया कहा जाता है।

मध्य एशिया भारत के लिए कूटनीति के साथ-साथ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण होता जा रहा है-

- मध्य एशिया बड़े बाजार के रूप में है, अत: भारत बैंकिंग, बीमा, आईटी आदि क्षेत्रों का लाभ उठा रहा है।
- मध्य एशिया से संबंध बनाकर पाक को प्रतिसंतुलित किया जा सकता है।
- मध्य एशिया, अर्द्धचालक (Semi Conductor) उद्योग रखता है। अत: भारत संबंध बनाकर संयुक्त उपक्रम स्थापित कर सकता है।
- विश्व के तेल भण्डार कार्यक्षेत्र का 3% एवं प्राकृतिक गैस का 71% भण्डार रखता है, इसी तरह उज्बेकिस्तान में अनेक प्रकार के खनिज है। अत: भारत संबंध बनाकर अपने कार्यक्रमों को सफल बना सकता है।

लेकिन कई ऐसी समस्याए हैं जिससे भारत को मध्य एशिया तक प्रवेश में बाधा उत्पन्न हो रही है।

- भारत के लिए मध्य एशिया में प्रवेश पाकिस्तान के माध्यम से सरलता से हो सकता है। लेकिन पाकिस्तान के साथ मधुर संबंध नहीं है और जो वैकल्पिक रास्ते हैं वे खर्चीले और जटिल है।
- अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा में पनप रहे आतंकवाद मध्य एशिया के देशों में फैल रहा है जिसके कारण दोनों देशों के बीच अंतर्विरोध उत्पन्न होता है।
- वर्तमान में म्यांमार थाइलैण्ड आदि देशों के साथ मिलकर मध्य एशिया नशीली दवाइयों का तस्करी कर रहा है। जिसका प्रभाव पंजाब, जम्मू कश्मीर आदि शहरों पर पड़ा है।